

फिराक गोरखपुरी (a)

जन्म : फिराक गोरखपुरी का जन्म 28 अगस्त, सन् 1896 को गोरखपुर में हुआ था। उनका मूल नाम खुपति सहाय फिराक है।

शिक्षा : उन्होंने रामकृष्ण की कक्षाओं से शुरुआत करके बाद अरबी, फारसी और अंग्रेजी में शिक्षा प्राप्त की। 1917 में एलही कलेक्टर के पद पर नियमित हुए, लेकिन स्वराज आंदोलन के लिए 1918 में पद-त्याग दिया। 1920 में स्वाधीनता आंदोलन में भाग लेने के कारण उन्हें 56 वर्ष की उम्र में जेल भी गई। वे कुछ समय तक इलाहाबाद विश्वविद्यालय के अंग्रेजी विभाग में अध्यापक रहे।

सम्मान : उन्हें गुले-नामा के लिए साहित्य अकादेमी पुरस्कार, ज्ञानपीठ पुरस्कार और सोवियत लैंड नेटक अवार्ड से सम्मानित किया जा चुका है।

सहृदयपूर्ण रचनाएँ : गुले-नामा, लक्ष्मी जिंदगी, रंगी-बाघरी, उर्दू गजलगाई इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं।

निधन : इनका देहांत सन् 1983 में हुआ।
भाषा शैली - फिराक गोरखपुरी ने अपनी रचनाओं में परंपरागत भावबोध और शब्द गंडार का प्रयोग किया है। साथ ही उन्होंने नई भाषा और नए विषयों पर भी लिखा है। इनकी भाषा मुहावरदार और लाक्षणिक है।

सुबाइयाँ, जलजल

8. शायर शरवी के लच्छे को बिजली की चमक की तरह कहकर क्या भाव व्यंजित करना चाहता है ?

→ परन्तु कविता में शायर शरवी के लच्छे को बिजली की चमक की तरह कहकर भाई-बहन के मधुर संबंध के मधुर संबंध की ओर संकेत करता है। जिस प्रकार बादलों में बिजली की चमक विद्यमान होती है, वैसे ही बहन के दिल में भी भाई के प्रति हमेशा सीधे प्रेम की मिठास रहती है। भाई-बहन का वंधन पवित्र और अटूट है।

9. रुपुद का परदा रवोलने से क्या आशय है ?

→ रुपुद का परदा रवोलने से आशय है - दूसरों की त्रिंदा कर स्वयं के दोषों को बताना। जिस व्यक्ति का जैसा नजरिया होगा, उसे सभी व्यक्ति वैसे ही दिखाई देंगे। वही व्यक्ति को सभी वुरे ही दिखाई देंगे। हमें दूसरों के अकर्णों को न देखकर उनके गुणों से सीख लेकर स्वयं के गुणों में सुधार करना चाहिए।

10. किस्मत हमको रो लेवे है हम किस्मत को रो ले है - बुध को देखी न ठहराकर व्यक्ति हमेशा भाग्य में इस पंक्ति में शायर की किस्मत के साथ तना-तनी का रिश्ता अभिव्यक्त हुआ है। चर्च कीजिए

→ भारतीय समाज की मानसिकता भाग्य को दोष देने की है। रुपुद को शैषी न ठहराकर व्यक्ति हमेशा भाग्य में ऐसा ही लिखा था कहता रहता है। व्यक्ति को कोई उपलब्धि न मिलने पर इसे किस्मत (भाग्य) में लिखा मानना सही नहीं है क्योंकि व्यक्ति के कर्म ही भाग्य बनाते हैं। मनुष्य को हमेशा पुरुषार्थ करने रहना चाहिए।

दृष्टिणी करें

(क) जोड़ी के चाँद और गगन के चाँद का रिश्ता

→ पृथ्वी में जो अपना वैरा आकाश के चाँद के समान ज़्यादा सुंदर और अनमोल लगता है। जिस प्रकार आसमान का चाँद सभी के दिल को लुभाता है उसी प्रकार एक बच्चा भी अपनी किशोरियों से सभी का मन मोह लेता है।

(ख) सावन की बरसेँ व रक्षाबंधन का पर्व

→ सावन की बरसेँ व रक्षा बंधन के पर्व का आपस में गहरा संबंध है। सावन में आसमान में बादलों की काली-काली बरसेँ रहती हैं और उन बादलों में बिजली के लच्छे चमकते हैं। जिस प्रकार सावन का बादलों से और बादलों का बिजली से अभिन्न संबंध है, वैसे ही राखी के धागे में भी बिजली के लच्छों की चमक भाई-बहन के अटूट प्रेम के प्रतीक है। भाई-बहन के मिठास भरे बंधन के प्रतीक यह रक्षाबंधन का पर्व लड़ी है।